134 P
733
M

1333
1021

No. 1. "Saingit Sarowar" U.P.
733

श्री:

संगीत-सरोवर

(देश-तट)

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
15 AUG. 1932

संकलनकर्त्ता—
विश्वनाथलाल श्रीवास्तव, 'विशारद'
रमापति शुक्ल, बी० ए०, 'विशारद'

मार्गशीर्ष,
प्रथम संस्करण २००० प्रतियाँ | सं० १९८८ वि० | मूल्य चार आने

891.431
Sh86Sa

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 733
Date 18.12.71
GOVT. OF INDIA

: श्री :

जो भरा नहीं है भावों से
बहती जिसमें रस-धार नहीं ।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।

◆ ◆

वन्दे मातरम् ।
सुजलां सुफलां मलयज - शीतलां
शस्य - श्यामलां मातरम् ।
वन्दे मातरम् ॥
शुभ्र - ज्योत्स्नां पुलकित - यामिनीं,
फुल्लकुसुमित - द्रुमदल - शोभिनीं,
सुहासिनीं सुमधुर - भाषिणीं,

सुखदां वरदां मातरम् ।
वन्दे मातरम् ॥

त्रिंशकोटि-कंठ कलकलनिनाद कराले
द्वित्रिंश-कोटि-भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बोले मा तुमि अबले ।
बहुबल धारिणीं नमामि तारिणीं,
रिपुदल —वारिणीं मातरम् ।
वन्दे मातरम् ॥

श्यामलां, सरलां सुस्मितां भूषितां
धरणीं भरणीं मातरम् ।
वन्दे मातरम् ।

◆ ◆

बन्दहुँ मातृ भारत - धरनि ।
सकल जग सुख - श्रैनि, सुखमा-
सुमति-सम्पति·सरनि ॥ बन्दहुँ० ।

ज्ञान - घन, विज्ञान - धन - निधि,
प्रेम - निर्भर - झरनि ।
त्रिजग - पावन, हृदय - भावन,
भाव जन - मन भरनि ॥ बन्दहुँ ॥
सेत हिमगिरि सुयश सुरसरि,
तेज - तप - मय तरनि ।
सरित - वन-कृषि-भरित - भुवि-छवि-
सरस-कवि-मति-हरनि ॥ बन्दहुँ० ॥
न्याय - मग - निर्धार - कारिनि,
द्रोह - दुर्मति - दरनि ।
सुभग - लच्छिनि सुकृत - पच्छिनि
धर्म - रच्छन - करनि ॥ बन्दहुँ० ॥

◆ ◆

जय जय प्यारा भारत-देश ।

जय जय प्यारा, जग से न्यारा,
शोभित सारा, देश हमारा ।
जगत मुकुट जगदीश - दुलारा,
जग - सौभाग्य सुदेश ।
जय जय प्यारा भारत देश ॥

(२)

प्यारा देश जय देशेश,
अजय अशेष, सदय विशेष ।
जहाँ न संभव अघ का लेश,
संभव केवल पुण्य - प्रवेश ।
जय जय प्यारा भारत देश ॥

(३)

स्वर्गिक शीश - फूल पृथिवी का,
प्रेम - मूल - प्रिय - लोक त्रयी का ।

सुललित प्रकृति नटी का टीका,
ज्यों निशि का राकेश ।
जय जय प्यारा भारत देश ॥

(४)

जय जय शुभ्र हिमाचल - शृंगा,
कल-रव-निरत कलोलिनि-गङ्गा ।
भानु-प्रताप-चमत्कृत अङ्गा,
तेज-पुंज, तप-वेश ।
जय जय प्यारा भारत देश ॥

(५)

जग में कोटि कोटि जुग जीवै,
जीवन - सुलभ अमी - रस पीवै ।
सुखद वितान सुकृत का सीवै,

रहै स्वतंत्र हमेश।
जय जय प्यारा भारत देश॥

◆ ◆

जय जय भुवि-भार-
हरन, भारत-हितकारी।
भारत-भुवि-भार-हरन,
आरत - उद्धार - करन,
जय जय संसार-सरन,
असरन-दुख-हारी।
जय जय भुवि - भार-
हरन, भारत-हितकारी॥

(२)

प्रथमहिं वसुदेव-सुवन,
त्रिभुवन-गति, ज्ञान-भुवन,

(७)

गोपी—जन—प्रान - रमन,
वृन्दावन - चारी।
नटवर - वपु केशि - सुदन,
केशव भव-क्लेश-कदन,
निज-जन-दुख-द्वेष - निधन,
बुध - जन - बलिहारी ॥
जय जय भुवि-भार-हरन,
भारत — हितकारी ॥

(३)

तदुपरि मर्याद - धाम,
रघुकुल - शोभाभिराम,
पावन-गुन-ग्राम राम,
रावन — संहारी।

तैसेहि श्री बुद्धदेव, बहु-
विधि-कृत-जगत - सेव,
भगवत अवतार एव,
दयाधर्म - धारी ॥
जय जय भुवि-भार-
हरन, भारत-हितकारी ॥

(४)

त्यों नृप विक्रम, अशोक,
कीरति सुरभित त्रिलोक
दीने अघ-पुंज रोकि,
पुण्य — डोर डारी ।
शङ्कर, नानक जोगिन्द,
त्यों ही श्री गुरु गोविन्द

(९)

अन्तिम मुनि दयानन्द

सुमिरत सुख भारी ॥

जय जय भुवि-भार-

हरन, भारत-हितकारी ॥

◆ ◆

भारत हमारा कैसा सुन्दर सुहा रहा है।
शुचि भाल पै हिमाचल, चरणों पै सिन्धु-अंचल।
उर पर विशाल सरिता-सित-हीर-हार-चंचल॥
मणि-बद्ध-नील-नभ का विस्तीर्ण पट अचंचल।
सारा सुदृश्य-वैभव मन को लुभा रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है॥

(२)

उपवन-सघन-वनाली, सुखमा-सदन, सुखाली।
प्रावृट के सान्द्र-घन की शोभा निपट निराली॥

कमनीय दर्शनीया कृषि-कर्म की प्रणाली।
सुरलोक की छटा को पृथ्वी पै ला रहा है।
भारत हमारा कैसा सुन्दर सुहा रहा है॥

(३)

सुरलोक है यहीं पर, सुख ओक है यहीं पर।
स्वाभाविकी सुजनता गत शोक है यहीं पर॥
शुचिता, स्वधर्म-जीवन, बे रोक है यहीं पर।
भव मोक्ष का यहीं पर अनुभव भी आ रहा है।
भारत हमारा कैसा सुन्दर सुहा रहा है॥

(४)

हे बन्दनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत।
हे न्याय - बन्धु निर्भय, निर्बन्धनीय भारत॥
मम प्रेम-पाणि-पल्लव-अवलम्बनीय भारत।

मेरा ममत्व सारा तुझ में समा रहा है।
भारत हमारा कैसा सुन्दर सुहा रहा है॥

✦ ✦

कहाँ है कोई ऐसा स्थान।
जगत में जैसा हिन्दुस्तान॥
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
जगत से न्यारा हिन्दुस्तान॥
कि जिसको प्रेमी श्री भगवान—
करैं नित नूतन प्रेम प्रदान॥
अतः कर बड़ा प्रेम-अभिमान।
प्रेम की रखता हो जो शान॥
पड़ी हो जिसे प्रेम की बान।
कहाँ है कोई ऐसा स्थान।
जगत में जैसा हिन्दुस्तान॥

हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
जगत से न्यारा हिन्दुस्तान॥

(२)

धर्म का बहता हो जहँ स्रोत।
कर्म का पन्था हो प्रद्योत॥
भक्ति की जाग रही हो जोत।
भुक्ति का भी हो ओतप्रोत॥
अतः हो भुक्ति-मुक्ति की खान।
कहाँ है ऐसा कोई स्थान।
जगत में जैसा हिन्दुस्तान॥
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
जगत से न्यारा हिन्दुस्तान॥

(३)

दुलारा जगत-पिता का बाल।
प्रकृति माता का प्यारा लाल॥

पुंज शुचिता का मंजु विशाल।
सुरुचि सुन्दरता-सिन्धु-रसाल॥
दरस कर सुरपुर भूला मान।
कहाँ है ऐसा कोई स्थान।
जगत में जैसा हिन्दुस्तान॥

हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
जगत से न्यारा हिन्दुस्तान॥

(४)

बनैं हम सेवक इसके वीर।
धृष्ट, निर्भीक, धीर, गंभीर॥
हरैं जो देखैं इसकी पीर।
न पड़ने देवैं दुख की भीर॥
हमारा है यह तन मन प्रान।

कहाँ है कोई ऐसा स्थान।
जगत में जैसा हिन्दुस्तान॥

हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
जगत से न्यारा हिन्दुस्तान॥

◆ ◆

अयि भुवन - मनो - मोहिनी,
अयि निर्मल-सूर्य-करोज्वल-धरणी,
जनक - जननी - जननी ॥ टेक ॥

नील-सिन्धु-जल-धौत चरण-तल,
अनिल-विकम्पित श्यामल अंचल।
अम्बर-चुम्बित भाल हिमाचल,
शुभ्र — तुषार — किरीटिनी।
अयि भुवन—मनो—मोहिनी॥

(२)

प्रथम प्रभात उदय तव गगने,

प्रथम साम - रव तव तपोवने।

प्रथम प्रचारित तव मन—भवने,

ज्ञान धर्म कत काव्य काहिनी।

अयि भुवन—मनोमोहिनी ॥

(३)

चिर कल्याण-मयि तुमि धन्य,

देशे विदेशे वितरिछे अन्न।

जाह्नवि, जमुना. विगलित करुणा,

पुण्य - पियूष - स्तन - वाहिनी।

अयि भुवन — मनोमोहिनी,

अयि निर्मल-सूर्य्य-करोज्वल-धरणी।

जनक-जननी-जननी ॥ अयि ॥

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी, यह गुलसिताँ हमारा॥
गुरबत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में।
समझो हमें वहीं हों दिल हो जहाँ हमारा॥
पर्बत वो सबसे ऊँचा हमसाया आसमाँ का।
वो सन्तरी हमारा वो पासबाँ हमारा॥
गोदी में खेलती हैं इसके हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से रश्के-जिनाँ हमारा॥
ऐ आबरौद गंगा, वह दिन है याद तुझको।
उतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा॥
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा॥
यूनान, मिश्र, रोमाँ सब मिट गये जहाँ से।
अब तक मगर है बाक़ी नामोनिशाँ हमारा॥

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-ज़माँ हमारा॥
'इक़बाल' कोई महरम अपना नहीं जहाँ में।
मालूम क्या किसी को दर्दे-निहाँ हमारा॥

◆ ◆

वह देश कौन सा है॥

मन-मोहिनी प्रकृति की, जो गोद में बसा है।
सुख स्वर्ग सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसका चरण निरन्तर, रतनेश धो रहा है।
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है?
नदियाँ जहाँ सुधा सी, धारा बहा रही हैं।
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है?
जिसके बड़े रसीले फल कन्द नाज मेवे।
सब अङ्ग में सजे हैं वह देश कौन-सा है?

जिसमें सुगन्धवाले सुन्दर प्रसून प्यारे।
दिन रात हँस रहे हैं वह देश कौन-सा है?
मैदान गिरि वनों में हरियालियाँ लहकतीं।
आनन्दमय जहाँ है वह देश कौन-सा है?
जिसकी अनन्त धन से धरती भरी पड़ी है।
संसार का शिरोमणि वह देश कौन-सा है?
सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी।
जगदीश का दुलारा वह देश कौन-सा है?
पृथ्वी-निवासियों को जिसने प्रथम जगाया।
शिक्षित किया सुधारा वह देश कौन-सा है?
छोड़ा स्वराज्य तृणवत आदेश से पिता के।
वह राम थे जहाँ पर वह देश कौन-सा है?
देवी पतिव्रता श्री सीता जहाँ हुई थीं।
माता-पिता जगत का वह देश कौन-सा है?

आदर्श नर जहाँ पर थे बाल - ब्रह्मचारी।
हनुमान, भीष्म, शंकर, वह देश कौन-सा है ?
विद्वान, वीर, योगी, गुरु राजनैतिकों के।
श्री कृष्ण थे जहाँ पर, वह देश कौन-सा है॥
विजयी बली जहाँ के, बेजोड़ सूरमा थे।
गुरु द्रोण, भीम, अर्जुन, वह देश कौन-सा है॥
जिसमें दधीचि दानी हरिचन्द कर्ण से थे।
सब लोक का हितैषी वह देश कौन-सा है॥
वाल्मीकि-व्यास ऐसे जिसमें महान कवि थे।
श्री कालिदास वाला, वह देश कौन-सा है॥
निष्पक्ष न्यायकारी-जन जो पढ़े लिखे हैं।
वे सब बता सकेंगे वह देश कौन-सा है॥
पैंतीस कोटि भाई सेवक सपूत जिसके।
भारत सिवाय दूजा वह देश कौन-सा है॥

मीले सबे भारत-सन्तान
एकतान मन प्राण।
गाओ भारतेर यशोगान
सबे भारत-सन्तान ॥
भारत - भूमिर तुल्य आछे कोन स्थान?
कोन अद्रि अभ्रभेदी हिमाद्रि समान?
फलवती वसुमती स्रोतस्वती पुण्यवती।
शतखनि कत मणि रत्नेर निधान ॥
होऽक भारतेर जय।
गाओ भारतेर जय, होऽक भारतेर जय,
जय भारतेर जय, की भय, की भय?
गाओ भारतेर जय ॥
रूपवती साध्वी सती भारत - ललना।
कोथा दीबे तादेर तुलना; शर्मिष्ठा सावित्री सीता॥

दमयन्ती पतिव्रता - अतुलना भारत - ललना !
होऽक भारतेर जय ।
गाओ भारतेर जय, होऽक भारतेर जय ।
जय भारतेर जय, की भय, की भय ?
गाओ भारतेर जय ॥
भीष्म द्रोण भीमार्जुन नाहिं की स्मरण ।
आर यतो महा बीर - गण ॥
भारतेर छिल सेतु, अनार्येर धूमकेतु ।
आर्त-बन्धु दुष्टेर-दमन ॥
होऽक भारतेर जय ॥
गाओ भारतेर जय, होऽक भारतेर जय ।
जय भारतेर जय, की भय, की भय ?
गाओ भारतेर जय ॥
केन डर भीरु, कर साहस - आश्रय ।

यतोधर्मस्ततोजयः छिन्न - भिन्न हीनबल।
ऐक्ये ते पाइबो बल।
मायेर मुख उज्ज्वल करिते की भय?
होऽक भारतेर जय॥
गाओ भारतेर जय, होऽक भारतेर जय।
जय भारतेर जय, की भय, की भय?
गाओ भारतेर जय॥

◆ ◆

हे जन्म-भूमि जननी! तुझको मैं आदरूँगा।
निज बाहु-बल से तेरा संकट सभी हरूँगा॥
निज बुद्धि-वाक्य-बल से साहित्य-घर भरूँगा।
सम्पत्ति सारी अपनी चरणों पै ले धरूँगा॥
तन मन बचन से धन से सेवा तेरी करूँगा।
तेरे लिये जिऊँगा तेरे लिये मरूँगा॥

(२)

दुर्लभ शरीर नर का तूने मुझे दिया है ।
फल फूल अन्न देकर परिपुष्ट भी किया है ॥
घी दूध नीर तेरा भर पेट नित पिया है ।
इस हेतु मैंने मन में दृढ़ नेम यह लिया है ॥
तन मन बचन से धन से सेवा तेरी करूँगा ।
तेरे लिये जिऊँगा तेरे लिये मरूँगा ॥

(३)

जननी सुप्रेम तेरा मन में मेरे भरा है ।
निज देश-भाइयों का शुभ नेह भी खरा है ॥
चातक के चित में जब तक स्वाती का आसरा है ।
तब तक के हेत मैंने मन में यही धरा है ॥
तन मन बचन से धन से सेवा तेरी करूँगा ।
तेरे लिये जिऊँगा तेरे लिये मरूँगा ॥

(४)

आवेगा कब सुदिन वह जब मैं जवान हूँगा।
कब मालवीय सा, या गाँधी-समान हूँगा॥
कब लाजपत बनूँगा, मोती सुजान हूँगा।
हो कर सुरेन्द्र सा भी हर दम यही कहूँगा॥
तन मन बचन से धन से सेवा तेरी करूँगा।
तेरे लिये जिऊँगा तेरे लिये मरूँगा॥

(५)

एनी बेसेण्ट की सी पाऊँ अगर सुबानी।
विद्या-चतुर तिलक की मेहता की बुद्धिमानी॥
दृढ़ युक्ति गोखले की सैयद की छेड़खानी।
तो भी सदा रटूँगा बस एक ही कहानी॥
तन मन बचन से धन से सेवा तेरी करूँगा!
तेरे लिये जिऊँगा तेरे लिये मरूँगा॥

(६)

आवेगी यदि विपत कुछ हँस कर उसे सहूँगा।
सेवा में तेरी माता तत्पर सदा रहूँगा॥
सम्मान धन सुपदवी कुछ भी न मैं चहूँगा।
कहता हूँ, कह चुका हूँ, फिर भी यही कहूँगा॥
तन मन बचन से धन से सेवा तेरी करूँगा।
तेरे लिये जिऊँगा तेरे लिये मरूँगा॥

(७)

सुन ली है तेरी महिमा ग्रन्थों ने जो बखानी।
अब देखता नहीं हूँ सम्पत्ति वह पुरानी॥
लख दीन हीन तुझको पचता नहीं है पानी।
इस हेतु पैज मैंने है अपने मन में ठानी॥
तन मन बचन से धन से सेवा तेरी करूँगा।
तेरे लिये जिऊँगा तेरे लिये मरूँगा॥

चल रे चल सबे भारत-सन्तान
मातृ-भूमि करे आह्वान ॥
वीर-दर्पे पौरुष-गर्वे, साध रे
साध सबे देशेर कल्याण—
सबे भारत-सन्तान, मातृ - भूमि
करे आह्वान ॥ चलरे० ॥
पुत्र बिना मातृ दैन्य
के करे मोचन ।
उठो, जागो, सबे, बोलो,
माँगो ; तव पद संपिनु पराण—
सबे भारत-सन्तान, मातृ-भूमि
करे आह्वान ॥ चलरे चल० ॥
एक मंत्रे कर जप,
एक मंत्रे तप ।

शिक्षा दीक्षा, लक्ष मोक्ष एक,
एक सुरे गाहो सबे गान।
देश देशान्ते चल रे
आन्ते नव नव ज्ञान॥
नव भावे नवोत्साहे, मातो
शिखावोरे नवतर तान।
सबे भारत-सन्तान, मातृ-भूमि
करे आह्वान॥ चलरे०॥
लोक—रंजन शोक-गंजन
ना करि दृक्पात्।
यः शुभः यः ध्रुवः न्याय
नाहोत जीवन कर दान॥
दलादलि सबे भूलि
हिन्दु मुसलमान।

एक पथे एक साथे चल
उड़ाइये एकता-निशान ॥

चलरे चल सबे भारत-सन्तान
मातृ-भूमि करे आह्वान ॥

◆ ◆

भारत सर्वस्व हमारा है।
वह हमसे कभी न न्यारा है ॥
उसके मृदु मंजु प्रभंजन से,
हैं हरे भरे हम तन मन से।
जीवित हैं उसके जीवन से,
हैं धनिक उसी के ही धन से ॥
उस बिना न कहीं गुजारा है।
भारत सर्वस्व हमारा है ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 733
Date 18-12-71
INDIA

नस नस में वही समाया है,
उसने निज निमक खिलाया है।
अमृतोपम क्षीर पिलाया है,
नश्वर भव मध्य जिलाया है॥
पाया उसमें सुख सारा है।
भारत सर्वस्व हमारा है॥
उसमें अभाव किस कौशल का,
पकड़ा न छोर उसने छलका॥
जो विजय कर सके जल थल का,
बल पंचमांश है भूतल का॥
उसमें शुभ शक्ति अपारा है।
भारत सर्वस्व हमारा है॥
वह भूतल का उजियाला है,
उसका सब ढङ्ग निराला है।

तन से यद्यपि वह काला है,
पर अत्युज्वल मन वाला है॥
उसने ध्रुव धर्म प्रचारा है।
भारत सर्वस्व हमारा है॥
वह मनुष्यत्व का त्राता है,
वह अखिल विश्व का भ्राता है।
वह अन्न दान का दाता है,
अति दिव्य ज्ञान का ज्ञाता है॥
पृथ्वी का श्रेष्ठ सितारा है।
भारत सर्वस्व हमारा है॥
उसके भंडार भरेंगे हम,
दल कर सब दुःख हरेंगे हम।
उसका हित सदा करेंगे हम,
हाँ, उस पर सदा मरेंगे हम॥

वह हमें स्वर्ग से प्यारा है ।
भारत सर्वस्व हमारा है ॥

◆ ◆

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता ।
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल वंगा ॥
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंगा ।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ
आशिश माँगे, गावे तव यश गाथा ॥
जन-गण-मंगल - दायक जय हे,
भारत -- भाग्य — विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ॥

(२)

अहरह तव आह्वान प्रचारित
सुनि तव उदार वाणी।
हिन्दु बौद्ध सिख जैन पार-
सिक मुसलमान ख्रिस्तानी॥
पूरब पश्चिम आसे, तव सिंहा-
सन पासे, प्रेम हार हय गाथा।
जन-गण-ऐक्य-विधायक जय हे,
भारत — भाग्य — विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय, जय, जय, जय हे॥

(३)

पतन अभ्युदय बन्धुर पंथा
युग युग धावित यात्री।

(३३)

हे चिरसारथि ! तव रथ - चक्रे

मुखरित पथ दिन रात्री ॥

दारुण विप्लव माँझे, तव शंखध्वनि

बाजे, संकट - दुःख - त्राता ।

जन-गण-पथ-परिचायक जय हे,

भारत — भाग्य — विधाता ॥

जय हे, जय हे, जय हे,

जय, जय, जय, जय हे ॥

(४)

रात्रि प्रभातिल उदित रविच्छवि

पूर्ण उदय - गिरि - भाले ।

गाहे विहंगम पुण्य समीरण

नव जीवन रस ढाले ॥

तव करुणारुण रागे, निद्रित भारत जागे ;
तव चरणे नत माथा।
जय जय जय हे जय राजेश्वर,
भारत—भाग्य — विधाता ॥
जय हे, जय हे, जय हे,
जय, जय, जय, जय हे ॥

◆ ◆

हमें तो देश भारत अपना
प्राणों से भी प्यारा है।
हम हैं भारत के, भारतवर्ष
ही जीवन हमारा है॥
जमाना हेच है बदरङ्ग
जिसकी शान के आगे।
वही संसार सुख का स्वर्ग
इन्द्रासन हमारा है॥

बिताया खेल ऋषियों ने
लड़कपन गोद में जिसकी ।
पुराना जगमगाता मान
वह जीवित हमारा है ॥
हमारा धर्म-संचित कर्म,
ईश्वर, इष्ट, जो कुछ है ।
मेरी आँखों का तारा प्यारा
बस भारत हमारा है ॥
सुभट रण - बाँकुरे कवि-
लेखकों की खान है जिसमें ।
अखिल अनमोल रत्नों का
वो सुखसागर हमारा है ॥
हम हैं कुर्बान उसके
जंगलों पर्वत व टीलों पर ।

ये जीवन उसकी प्यारी
रज पै न्योछावर हमारा है॥
जिमीं गद्दा हमारा मखमली है
विन्ध्य तकिया है।
हिमालय है सिपाही
सिन्धु भी सेवक हमारा है॥
दुखी हैं उसके दुख में
औ सुखी हैं सुख में भारत के।
हम हैं सन्तान उसकी
वह पिता रक्षक हमारा है॥
न छोड़ूँगा न छोड़ूँगा
फटे इस तेरे दामन को।
कहूँगा मरते दम तक
प्रेम-मय भारत हमारा है॥

कहो 'माधव' इसाई हिन्दु
औ मुसलिम सब एक स्वर से।
ये भारतवर्ष हमारा है
हमारा है हमारा है॥

◆ ◆

पावन परम जहाँ की
मंजुल महात्म्य - धारा।
पहले ही पहले देखा
जिसने प्रभात प्यारा॥
सुरलोक से भी अनुपम
ऋषियों ने जिसको गाया।
देवेश को जहाँ पर
अवतार लेना भाया॥

बह मातृ - भूमि मेरी
वह पितृ - भूमि मेरी ॥
ऊँचा ललाट जिसका
हिमगिरि चमक रहा है।
सुवरन - किरीट जिसपर
आदित्य रख रहा है॥
साक्षात शिव की सूरत
जो सब प्रकार उज्वल।
बहता है जिसके सिर से
गंगा का नीर निर्मल॥
वह मातृ-भूमि मेरी वह पितृ-भूमि मेरी॥
सर्वोपकार जिसके जीवन
का व्रत रहा है।

प्रकृती पुनीत जिसकी
निरभय मृदुल महा है ॥
जहाँ शान्ति अपना करतव्र
करना न चूकती थी।
कोमल-कलाप कोकिल
कमर्नय कूकती थी ॥
वह मातृ-भूमि मेरी वह पितृ-भूमि मेरी ॥
वर-वीरता का वैभव
छाया जहाँ घना था।
छिटका हुआ जहाँ पर विद्या
का चाँदना था ॥
पूरी हुई सदा से जहाँ
धर्म की पिपासा।

सत संसकृत पियारी
जहँ की थी मातृ-भाषा ॥
वह मातृ-भूमि मेरी वह पितृ-भूमि मेरी ॥

✦ ✦

जगदीश ! यह विनय है जब प्राण तन से निकले ।
प्रिय देश देश रटते यह प्राण तन से निकले ॥
भारत-वसुन्धरा पर सुख - शान्ति - संयुता पर ।
शुचि-शस्य-श्यामला पर यह प्राण तन से निकले ॥
देशाभिमान धरते जातीय - गान करते ।
निज-देश-व्याधि हरते यह प्राण तनसे निकले ॥
भारत का चित्रपट हो युग नेत्र के निकट हो ।
श्री जाह्नवी का तट हो तब प्राण तनसे निकले ॥
दुख-दैत्य पर विजय हो अज्ञान-रात्रि क्षय हो ।
भारत समृद्धि-मय हो तब प्राण तन से निकले ॥

उद्योग, शान्ति, सुख हो आलस्य हो न दुख हो।
सबका प्रसन्न मुख हो तब प्राण तन से निकले॥
संकट न दुःख भय हो, सर्वत्र ही विजय हो।
ऐसा सुकाल जब हो तब प्राण तन से निकले॥
सब ही सतत सबल हों विद्या कला कुशल हों।
कर्तव्य पर अटल हों तब प्राण तन से निकले॥
देशोपकार करते मन - मातृ-भक्ति भरते।
जय जय स्वदेश रटते यह प्राण तन से निकले॥

◆ ◆

अयि मातृ-भूमि ! तेरे चरणों में सिर नवाऊँ।
मैं भक्ति-भेट अपनी, तेरी शरण में लाऊँ॥
माथे पै तू हो चन्दन, छाती पै तू हो माला।
जिह्वा पै गीत तू हो, मैं तेरा नाम गाऊँ॥
जिससे सपूत उपजे, श्री राम, कृष्ण जैसे।

उस तेरी धूलि को मैं, निज शीश पै चढ़ाऊँ॥
मानी समुद्र जिसकी धूली का पान करके—
करता है मान, तेरे उस पैर को मनाऊँ॥
वे देश मान वाले चढ़ कर उतर गये सब।
गोरे रहे न काले, तुझको ही एक पाऊँ॥
सेवा में तेरी सारे भेदों को भूल जाऊँ।
वह पुण्य नाम तेरा प्रति दिन सुनूँ सुनाऊँ॥
तेरे ही काम आऊँ तेरा ही मंत्र गाऊँ।
मन और देह तुझ पर बलिदान मैं चढ़ाऊँ॥

✦ ✦

ऐ मातृ-भूमि ! तेरी जय हो सदा विजय हो॥
प्रत्येक भक्त तेरा सुख-शान्ति-कान्ति-मय हो॥
अज्ञान की निशा में दुख से भरी दिशा में।
संसार के हृदय में तेरी प्रभा उदय हो॥

तेरा प्रकोप सारे जग का महा प्रलय हो।
तेरी प्रसन्नता ही आनन्द का विषय हो॥
वह भक्ति दे कि सुख में तुझको कभी न भूलूँ।
वह शक्ति दे कि दुख में कायर न यह हृदय हो॥

◆ ◆

होगा नहीं कहीं भी ऐसा,
अति दुरात्मा वह प्राणी।
अपनी प्यारी मातृ-भूमि भी,
जिससे नहीं गई जानी॥
"मेरी जननी यही भूमि है,"
इस विचार से जिसका मन—
नहीं उमंगित हुआ, वृथा है—
उसका पृथ्वी पर जीवन॥

क्या कोई ऐसा है, जिसका—
मन न हर्ष से भर जाता।
देश-विदेश घूमकर जिस दिन,
वह अपने घर को आता॥
यदि कोई है ऐसा, तो तुम,
जाँचो उसको भली प्रकार।
नाम न लेता होगा कोई,
करता होगा नहिं सत्कार॥
पावे वह उपाधि यदि उत्तम,
अथवा लक्ष्मी का भण्डार।
लम्बा-चौड़ा नाम कमा कर,
चाहे हो जावे मतवार॥
उसकी सब पदवियाँ व्यर्थ हैं,
उसके धन को है धिक्कार।

केवल अपने तन की सेवा,
करता है जो विविध प्रकार ॥
विमल कीर्ति का जीवन भर,
वह कभी न होगा अधिकारी ।
घोर मृत्यु के पंजे में फँस,
पावेगा वह दुख भारी ॥
तुच्छ धूल से उपजा था वह,
उसमें ही मिल जावेगा ।
उस पापी के लिये न कोई,
आँसू एक बहावेगा ॥

होकर धन्य धरा ने गाया,
चरण-कमल तव चूमि ।

"जगन्मोहिनी, जगज्जन्मदे,
जय माँ भारत - भूमि" ॥
सद्यःस्नान - वस्त्र गीला है,
जलधि-वारि-कण-भींगे बाल ।
वदन दीप्त है विमल हँसी से,
माँ! तेरा है भाल विशाल ॥
नाच रहे हैं नभ में घिर कर,
तारे और दिवाकर चन्द्र ।
तेरे पग पर मंत्र-मुग्ध सा,
अब्धि गरजता घन सा मन्द्र ॥
हो कर धन्य धराने गाया,
चरण - कमल तव चूमि ।
जगन्मोहिनी, जगज्जन्मदे,
जय माँ ! भारत - भूमि ॥

(२)

जानु - लग्न है सागर - लहरी,
तेरे सिर हिम-मुकुट-बहार।
नदियों का मानो तेरे उर,
झूल रहा है मुक्ता - हार॥
कभी तप्त मरु, ऊसर की तू,
भीषण छवि दिखलाती है।
कभी विश्व के श्याम शस्य में,
हँसती देखी जाती है॥

हो कर धन्य०—

(३)

शून्य गगन में प्रबल वायु भी,
निशि दिन चलती रहती है।
तेरे पग-रस चूस कोकिला
हर दम कलरव करती है॥

नभ में वज्र चला कर बादल,
प्रलय वृष्टि को करता है।
कुसुम-कुंज तेरे चरणों पर,
गन्ध - सृष्टि को करता है॥
हो कर धन्य०—

(४)

तेरा हृदय शान्ति - सागर है,
कण्ठ अभय का दाता है।
तेरे करों अन्न पाता जग,
मुक्ति पगों से पाता है॥
तेरे तनय सहें कितने दुख,
या कितने आनन्द करें।
जगपालिनि, जगतारिणि, जगकी—
जननी, भारत - भूमि अरे॥
हो कर धन्य०—

✦ ✦

जय जय जय भारत विशाल।

अशरन-शरन खल-दल-दलन,
करन सकल भुवन निहाल।

तव स्रोत-निःसृत श्रुति-सरित,
कवि-कुल-कलित वीचिमाल॥

कृत ध्वनित जग स्वकल निनाद,
शमित जन-मन-दुःख-ज्वाल।

तव गगन उदित ज्ञान-भानु,
नाशक मोह-तम कराल॥

कृष्ण बुद्ध गौतम कनाद,
व्यासादि जेहि किरन-माल।

रत्नाकर तव अति अपार,
रत्नवितरन मनहुँ थाल॥

विन्ध्य हिमालय मलय सह्य,
मुकुट मनि जिमि प्रकृति-भाल ।
सर सरि उपवन वन अनूप
विहरत भ्रमर खग मराल ॥
चिंघरत मत्त गजेन्द्र सिंह,
दहलत हृदय अरि-शृगाल ।
कामधेनु सम मंजु रेनु,
वन्दित सुर नर मुनि नृपाल ॥
रत्नगर्भा वीर - प्रसवा,
अन्नपूर्णा सर्वकाल ।
उमा रमा युत गिरा गेह,
रक्षित कालिका कराल ॥
जेहि हित मरन मारन
सुदृढ़ हम तैंतीस कोटि लाल ।

जगदैक बन्धु-प्रेम सिन्धु-सुजन
रंजन खलत काल ॥

तव यशोन्दु जग लक्ष्य बिन्दु
धवल विश्व जेहि रश्मिजाल ।

✦ ✦

यही दो वरदा माँ वरदान ।
ऐसे कार्य करें जिनसे हो,
भारत का उत्थान ।
यही दो वरदा माँ वरदान ॥
"मैं हिन्दू" "तुम मुसलमान"
यह भेद - भाव कर दूर ।
मिल हम दोनों भाई,
माँ के कष्ट करेंगे दूर ॥

यही बस मन में लें अब ठान ।
यही दो वरदा माँ वरदान ॥
"कष्ट बहुत है ! क्या तुम
दोगे इसमें अपनी जान ?"
"हाँ भावी रक्षा - हित,
कर देंगे तन भी बलिदान !"
इसी में समझें अपनी शान ।
यही दो वरदा माँ वरदान ॥
भारत में विद्या का घर घर,
होवे खूब प्रचार ।
दिन प्रति दिन 'बसु' तुल्य करें,
अब अद्भुत आविष्कार ॥
सिखायें जग को फिर हम ज्ञान ।
यही दो वरदा माँ वरदान ॥

चाह नहीं, मैं सुर बाला के,
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, माला में बिंध कर
उच्च हृदय-आसन पाऊँ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर हे हरि! डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के शिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली!
उस पथ में देना तुम फेंक,
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।
झंडा ऊँचा रहे हमारा ॥ टेक ॥
सदा शक्ति सरसाने वाला,
प्रेम - सुधा बरसाने वाला ।
वीरों को हरषाने वाला,
मातृ-भूमि का तनमन सारा ॥झंडा० ॥

(२)

स्वतंत्रता के भीषण रण में,
लख कर बढ़े जोश क्षण क्षण में ।
कांपें शत्रु देख कर मन में,
मिट जावे भय-संकट सारा ॥ झंडा० ॥

(३)

इस झण्डे के नीचे निर्भय,
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय ।

बोलो भारतमाता की जय,
स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा ॥ झंडा० ॥

(४)

आओ प्यारे वीरो आओ,
देश - धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिल कर गाओ,
प्यारा भारत देश हमारा ॥ झंडा० ॥

(५)

इसकी शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे।
विश्व मुग्ध करके दिखलावे,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झंडा ऊँचा रहे हमारा ॥

प्राण मित्रों ! भले ही गँवाना ।
पर यह झंडा न नीचे झुकाना ॥
कैसा झंडा तिरंगा है प्यारा ।
बीच चरखा चमकता सितारा ॥
शान सम्मान है यह हमारा ।
सिर झुकाता इसे हिन्द सारा ॥
इस पै सब कुछ खुशी से चढ़ाना ।
पर यह झंडा न नीचे झुकाना ॥

(२)

देश - स्वाधीनता की निशानी ।
पुण्य जातीयता की निशानी ॥
इसके पीछे हैं लाखों कहानी ।
हैं उठाते इसे स्वाभिमानी ॥

तुम भी लाखों मुसीबत उठाना ।
पर यह झंडा न नीचे झुकाना ॥

(३)

झंडा यह हर भवन पर चढ़ेगा ।
इसका दल रोज दूना बढ़ेगा ॥
गर्व से सब जगह यह उड़ेगा ।
प्रेम से लोक का सर झुकेगा ॥
द्रोहियों का न होगा ठिकाना ।
झंडा नीचे कभी मत झुकाना ॥

(४)

कष्ट वीरों ने अगणित सहे हैं ।
खून भी इसके कारण बहे हैं ॥
तो भी वे इसके शैदा रहे हैं ।
मर के भी यश अमरता लहे हैं ॥

तुम भी इज्जत न इसकी गँवाना।
अपना झंडा न नीचे झुकाना ॥

✦ ✦

अहाहा मोहन के मुख से निकला,
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत।
सचेत होकर सुना सभी ने,
स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
हरेक दिल में मची हुई है,
स्वतंत्रता की विचित्र हलचल।
प्रत्येक बच्चा पुकारता है,
स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत।
कुमारी हिमगिरि अटक कटकलौं,
बजेगा डंका स्वतंत्रता का।

कहेंगे पैंतिस करोड़ मिलकर,
स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
बना के कुटिया स्वतंत्रता की,
सपूत जेलों में रम रहे हैं।
निकल के देखेंगे वे तपस्वी,
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥

◆ ◆

हम गरीबों के गले
का हार वन्देमातरम् ।
छीन सकती है नहीं
सरकार वन्देमातरम् ॥
सिर चढ़ों के सिर में चक्कर
उस समय आता जरूर ।
कान में पहुँची जहाँ
झंकार वन्देमातरम् ॥

हम वही हैं जो कि होना
चाहिये इस वक्त पर ।
आज तो चिल्ला रहा
संसार वन्देमातरम् ॥
जेल में चक्की घसीटा
भूख से भी मर रहा ।
उस समय भी कह रहा
बेज़ार वन्देमातरम् ॥
मौत के मुँह पर खड़ा
है कह रहा जल्लाद से ।
भोंक दे सीने में वह
तलवार वन्देमातरम् ॥
डाक्टरों ने नब्ज देखी
सिर हिलाकर कह दिया ।

हो गया इसको तो यह
आज़ार वन्देमातरम् ॥
ईद होली दशहरा,
शबरात से भी चौगुना ।
है हमारा लाड़ला
त्योंहार वन्देमातरम् ॥
जालिमों का जुल्म भी
काफूर सा मिट जायगा ।
फैसला होगा सरे
दरबार वन्देमातरम् ॥

✦ ✦

होकर जवान बच्चो मत मुझको भूल जाना ।
मैं कष्ट पा रही हूँ आज़ाद तुम कराना ॥
उज्वल चरित्र रखना विद्वान पूर्ण बनना ।
भारत के भूले भटके पुत्रों को तुम उठाना ॥

पढ़कर बिदेश-भाषा पर-सभ्यता-शरण में।
निज मातृ-भूमि-भाषा को भूल तुम न जाना॥
खद्दर से तन को ढकना पुरखों की चाल चलना।
निज देश की कमाई फैशन में मत लुटाना॥
बनकर अमीर हाकिम धन मान पद के मद में।
गर्दन पै निर्बलों की मत छूरियाँ चलाना॥
निज बाहु बल से धन से तन से बचन वो मनसे।
दुखियों को दुष्ट लोगों के फन्द से छुड़ाना॥
तुम नंगे भूखे रहना सूखे चने चबाना।
पर देश-द्रोही बन कर मम कोख ना लजाना॥
हँस २ के कष्ट सहना मरना भी मिट भी जाना।
परतन्त्रता में लेकिन जीवन न तुम बिताना॥
हम हिन्द के हैं बच्चे हिन्दोस्ताँ हमारा।
निर्भीक होके निशि-दिन गाना यही तराना॥

ऐ मेरी जान भारत, तेरे लिए ये सर हो।
तेरे लिए ही ज़र हो तेरे लिए जिगर हो॥
हिचकूँ न तेरी सेवा से मेरी जान भारत।
गर्दन पै मेरी रक्खा शमशेर या तबर हो॥
ग़म जान के लिए भी मुझको कभी न होगा।
भारत तेरे लिए ही आती ये काम गर हो॥
क़िस्मत का मेरी तारा चमके फिर आसमाँ पर।
सेवा में तेरी माता गर ज़िन्दगी बसर हो॥
'भारत ही में सदा मैं पैदा हूँ और मरूँ मैं।'
ईश्वर न कुछ हो मन में, यह आरज़ू मगर हो॥

◆ ◆

खादी का बाना पहन लिया,
आजादी ध्येय हमारा है।

आज़ादी पर मर मिटना है।
हमने अब यही विचारा है।
प्राणों की भेंट चढ़ायेंगे,
हम बलिवेदी पर जायेंगे॥
हम अमर, नहीं मरने का डर,
यह तो जीने की राह भली।
हैं 'शिवा''प्रताप' गये जिससे
है वीरों की यह वही गली।
जननी की जय-जय गायेंगे,
हम बलिवेदी पर जायेंगे॥
हम बड़े शौक़ से पहनेंगे,
पहनायेंगे जो हथकड़ियाँ।
जेलों में अलख जगा करके,
तोड़ेंगे माता की कड़ियाँ।

अन्याय अनीति मिटायेंगे।
हम बलिवेदी पर जायेंगे॥

भालों, तलवारों, तोपों से,
हम कभी नहीं घबरायेंगे।
वह देश-प्रेम-मतवाले हैं,
जो शूली पर चढ़ जायेंगे।
निज देश स्वतंत्र बनायेंगे,
हम बलिवेदी पर जायेंगे॥

✦ ✦

हम सैनिक हैं स्वतंत्रता के,
कहते सदा पुकार-पुकार।
तीस कोटि सुत हैं जिस 'माँ' के,
वही हमारा देश उदार॥

हिमगिरि जिसका भाल-तिलक है,
सिंधु रहा है पाँव पखार।
सिन्धु, सरस्वति, जमुना, गंगा हैं
'माँ' के सुन्दर गलहार॥
हम वंशज हैं राम-कृष्ण के,
और शिवाजी की सन्तान।
हैं प्रताप के हम्हीं धरोहर,
धीर-वीर मतिमान, सुजान॥
अब हर भारतवासी अपने
मन में यही ठान ले आन—
'या भारत स्वाधीन करेंगे,
या दे देंगे अपनी जान'॥
विश्व-विजय कर आज तिरंगा—
झंडा हमें उड़ाना है।

वीर-भूमि के हैं अधिवासी,
जग को यह दिखलाना है ॥
आज तिलक का स्वप्न,
सत्य करके हमको बतलाना है ।
हँसते-हँसते बलिवेदी पर,
अपना शीश चढ़ाना है ॥

सत्य-सूर्य की अरुण छटा ने,
अनुपम दृश्य दिखाया है ;
तिमिर-राशि को भेदन करके,
नवजीवन सरसाया है ।
विश्व-विजयिनी प्रबल क्रांति ने,
यह संदेश सुनाया है ;

"शीघ्र तजो दासत्व-भाव को,
कर्मयोग - युग आया है ॥"
मातृ-वंदना करके वीरो,
आगे को अब बढ़े चलो।
विजय तुम्हारी निश्चय होगी,
दृढ़ - प्रतिज्ञ हो चले चलो ॥

◆ ◆

भारत जननि, तेरी जय तेरी जय हो।
तेरा विजय-सूर्य माता ! उदय हो ॥
मेरे लिए जेल हो स्वर्ग का द्वार।
बेड़ी की झन्‌झन् में वीणा की लय हो ॥
आवें पुनः कृष्ण देखें दशा तेरी।
सरिता सरों में भी बहता प्रणय हो ॥
गाँधी का संकल्प पूरा करें ईश।
राणा शिवाजी का फिर से उदय हो ॥

कहता खलीला कि हिन्दू मुसलमान—
मिलकर कहें, तेरी जय तेरी जय हो ॥

◆ ◆

धन्य माँ वसुन्धरा, जयति भव्य भारती ॥ टेक ॥
हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख,
पारसी इसाई जैन ।
भक्ति-युक्त पूजैं और,
सेवा करैं दिन रैन ॥
सन्तान तीस कोटि,
मंत्र वेद के उचारती ।
धन्य माँ वसुन्धरा,
जयति भव्य भारती ॥
गाँधी मालवीय से,
तुम्हारे ख्यात हैं सपूत ।

दास, नेहरू गए हैं,
स्वर्ग में तुम्हारे दूत ॥
प्रेम से उतारें आ,
तिलक तेरी आरती ।
धन्य माँ वसुन्धरा,
जयति भव्य भारती ॥
गा रहा समस्त विश्व,
आज तेरा कीर्ति-गान ।
सत्य की विजय से तेरा,
हो रहा सर्वत्र मान ॥
तेरे तेज को समस्त,
सृष्टि है निहारती ।
धन्य माँ वसुन्धरा,
जयति भव्य भारती ॥

जहाँ जन्म देता हमें है विधाता।
उसी ठौर में चित्त है मोद पाता॥
जहाँ हैं हमारे पिता, बन्धु, माता।
उसी भूमि से है हमें सत्य नाता॥
जहाँ की मिली वायु है जीवदानी।
जहाँ का भिदा देह में अन्न पानी॥
भरी जीभ में है जहाँ की सुबानी।
वही जन्म की भूमि है भूमि-रानी॥
लगी धूल थी देह में जो हमारी।
कभी चित्त से हो सकेगी न न्यारी॥
बनाती रही देह को जो निरोगी।
किसे धूल ऐसी सुहाती न होगी॥
पिला दूध माता हमें पालती है।
हमारे सभी कष्ट भी टालती है॥

उसी भाँति है जन्म की भू उदारा।
सदा संकटों में सुतों का सहारा॥
कहीं जा बसें चाहता जी यही है।
रहे सामने जन्म की जो मही है॥
नहीं मूर्ति प्यारी कभी भूलती है।
छटा लोचनों में सदा झूलती है॥
दयानाथ! ऐसी हमें बुद्धि दीजे।
दशा देश की देख छाती पसीजे॥
दुखों से बचाते रहें देश प्यारा।
बनावें उसे सभ्य सत्कर्म द्वारा॥

◆ ◆

अपवर्ग से अनोखी मनमोहिनी छटायें।
सुख-साज स्वर्ग को भी पाकर न भूल जायें॥
हों पूज्य मातृ-भू की मनमें बसी मड़ैयाँ।
रमती रहें रगों में वे रीतियाँ रवैयाँ॥

ड़पें हवेलियों में टूटी कुटी गँवा के।
भूलें न दृश्य तेरे प्रिय पावनी प्रभा के॥
घर-द्वार, वृक्ष, बागों, सरिता, सरोवरों में।
भूला रहे हृदय यह उन आँगनों घरों में॥
जिसमें रहे सहे हैं, घुटनों जहाँ चले हैं।
शिशु से किशोर होकर जिसमें बढ़े पले हैं॥
मूठ में जहाँ की रज चाटते रहे हैं।
जिस मानवी मही में पड़ लोटते रहे हैं॥
मलयाचली हवा के झोंके न चाहते हैं।
जिसमें जिये उसी को सुख-स्रोत मानते हैं॥
वे झील ताल गड्ढे मन में समा रहे हैं।
सम्मान मानसर का मनको मिटा रहे हैं॥
गल जाएँ हिम से चाहे उत्तप्त ताप से हों।
भगवान् ! किन्तु न्यारे मत मातृ-भूमि से हों॥

कल्याणकारिणी है विस्तारिणी वही है
सुखदायिनी सुवासी संसार में वही है
हैं वज्र के हृदय जो उसके लिए न तरसें
वे नैन ही नहीं जो उसके लिए न बरसें ॥
पाई हुई प्रतिष्ठा पुरुषत्व की गँवाई ।
७ [illegible]ने जन्म जन्म-भू की जिसने न लौ लगाई ।

◆ ◆

आन भारत के लिये है प्रान भार[illegible]त के लिये ।
अपने जीवन का सभी सामान भारत क[illegible] लिये ॥
क्या हुआ निर्धन हैं हम, निर्बल हैं औ महकूम है[illegible]यें ?
शौक़ से खाएँगे दिल पर बाण भारत के लिये ॥
आप मर जायेंगे, लेकिन मरके क्या कर जायेंगे ?
मुश्किलें आसान कर जायेंगे भारत के लिए ॥५॥

ग़ैर की ख़ातिर दिया सर्वस्व 'ज़ेबा' अब तलक।
है बली देने को अब यह जान भारत के लिए॥

◆ ◆

अधीन होकर बुरा है जीना,
है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर।
अमृत को तज कर गरल से प्याला—
है भरना अच्छा, स्वतन्त्र [illegible] होकर॥
पड़ी हो हाथों में हथक[illegible]ड़ी यदि,
तो स्व[illegible]र्ग के सुख से लाभ क्या है?
नरक [illegible] क दुख में निवास निशिदिन—
है करना अच्छा, स्वतन्त्र होकर॥
जो दास होकर मिले भवन में—
सुस्वादु भोजन, तो तुच्छ है वह।
सदैव उपवास करके बन-बन—
विचरना अच्छा, स्वतंत्र होकर॥

मिले उपाधी या मान पदवी—
जो सेवा करके, तो व्यर्थ है सब।
घृणा व अपमान के गढ़े में,
उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥

◆ ◆

क[illegible]गो कुछ देश-हित भ्राता,
अगर [illegible] आए हो दुनियाँ में।
निछावर देश पर सर [illegible] कर,
निशाँ रखने को दुनियाँ में॥
भलाई कर चलो सबकी
तुम्हारा भी भला होगा।
भलाई के लिए सर दे
दिये लाखों ने दुनियाँ में॥

अगर इच्छा तुम्हारी है
तरक्की हिन्द कर जावे।
हटाओ मत क़दम पीछे
बढ़ाए जाओ दुनियाँ में॥
ज़रूरत है कि हों
कुरबानियाँ भारत पै लाखों की।
फ़क़ीरी धार लो भारत का
यश रखने को दुनियाँ में॥
जो करना चाहो कर लो आज,
फिर कल का भरोसा क्या।
समय गुज़रा कहीं आता
सुना हमने न दुनियाँ में॥
ये तोड़ो दासत्ता की बेड़ियाँ
स्वाधीनता ले लो।

वतन का राग घर घर को
सुनाओ सारी दुनियाँ में ॥

◆ ◆

जिसको न अपने बन्धुओं के
दुःख सुख का ध्यान है।
जिसको न अपने पूर्वजों की
कीर्ति का कुछ ज्ञान है ॥
जिसको न अपनी हीनता पर
शोक खेद महान है।
जिसको नहीं खलता कभी
संसार में अपमान है ॥
जिसको न निज गौरव तथा
निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है
और मृतक—समान है ॥

"मैं कौन हूँ ? क्या हूँ।"
जिसे इसका नहीं कुछ ध्यान है।
जो स्वार्थ में रत हुआ
घर घर घूमता, ज्यों श्वान है॥
दुत्कार से फटकार से
होता नहीं मन-म्लान है।
कैसे कहे कोई उसे
वह मानवी संतान है॥
जिसको न निज गौरव
तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु
निरा है, और मृतक-समान है॥
जिसको न अपनी जाति के
उत्थान का अरमान है।

जिसको न अपनी जन्मदा
शुचि भूमि का अभिमान है॥
जिसको न अपनी मातृ-भूमि
का हृदय से मान है।
जिसको न अपनी हीनता
पर खेद शोक महान है॥
जिसको न निज गौरव तथा
निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है,
और मृतक—समान है॥

◆ ◆

अब उठो-उठो हे आर्य-वीर-गण जागो।
बहु निद्रा स्वार्थ अनैक्य भिन्नता त्यागो॥

सज्जित हो सत्वर कर्मक्षेत्र में आओ।
जग को अपनी शुचि देश-भक्ति दिखलाओ ॥१॥
हिन्दू या मुस्लिम एक हृदय हो जाओ।
उच्चस्वर से राष्ट्रीय गीत मिल गाओ॥
जिसकी मिट्टी से बने, बढ़े बल पाकर।
उस प्रिय स्वदेश पर करो प्राण न्योछावर॥
यों मातृ-भूमि के पाद-पद्म अनुरागो॥ अब०॥
कर आत्म-त्याग महमद ने धर्म चलाया।
श्री बुद्धदेव ने ऐक्य-भाव फैलाया॥
ईसा ने क्रूसो को गलहार बनाया।
श्री दयानन्द ने इसीलिए विष खाया॥
धर आत्म-त्याग का ध्यान इसी पथ लागो॥३॥
थे शर-शय्या पर भीष्म पड़े जिस कारण।
होरेशास ने पग किये सेतु-पथ धारण॥

वीरेश शिवा जी ने स्वराज्य फैलाया।
राणा प्रताप ने बन-बन कष्ट उठाया॥
ले आत्म-त्याग-आदर्श इन्हें तुम जागो ॥४॥

कर आत्म-त्याग हो गये अहो दादा जी।
अब हैं श्री गान्धी, विपिन, घोष, लाला जी॥

सहते थे कष्ट अनेक बाल गङ्गाधर।
सर्वस्व देते हैं मालवीय पंडित वर॥
यह आत्म-त्याग-सिद्धान्त कभी मत त्यागो ॥५॥

✦ ✦

बजी दुंदुभी भेरी धमकी,
उठो शूर रणधीर बनो।
जन्म-भूमि की रक्षा कर लो,
आन रखो प्रणवीर बनो॥

असुर-नाश-हित त्रिपुरारी के
सुभटो ! तीखे तीर बनो।

देश, जात पर मर मिटने को,
भारतीय अब बीर बनो ॥

कायरता दो छोड़, अड़ो अब,
युद्ध स्थल में बन चट्टान।

हो नृसिंह गरजो केहरि सम,
जय निश्चय, लो मन में ठान ॥

अविचल गिरि से रहो विपद में,
सागर सम गम्भीर बनो।

देश, जाति पर मर मिटने को,
भारतीय अब वीर बनो ॥

✦ ✦

उठो भाइयो ! सो रहे क्यों बताओ ।
महा घोर निद्रा भगाओ भगाओ ॥
सभी आज राष्ट्रीय वीणा बजाओ ।
तथा एकता, प्रेम का गीत गाओ ॥

(२)

उगा भानु सौभाग्य का है तुम्हारे ।
छिपे व्योम से हैं दुखों के सितारे ॥
उषा देवि देखो, जया - वस्त्र धारे ।
कभी से खड़ी आज है यों पुकारे—

(३)

'उठो और देखो कि क्या हो रहा है ।
वही मूर्ख है जो पड़ा सो रहा है ॥'
न क्या वाक्य यह ज्ञानियों ने कहा है ?
कि 'कङ्गाल है आलसी जो महा है ।

(४)

'सदा व्यर्थ है काल को जो गँवाता।
स्वयं स्त्रीय सर्वस्व है जो लुटाता॥
करे लाख चेष्टा भले ही विधाता।
नहीं काल बीता कभी हाथ आता॥'

(५)

तुम्हें और सोना भला चाहिये क्या ?
मिला योग खोना भला चाहिये क्या ?
व्यथा भाइयों के महा क्लेश की क्या ?
नहीं देखते हो दशा देश की क्या ?

(६)

लखो तो ज़रा क्या दशा है तुम्हारी !
मिली जा रही धूल में कीर्ति सारी॥

उठो नींद त्यागो महा नाशकारी।
करो कार्य आरम्भ हो धैर्य-धारी॥

(७)

अकर्मण्यता दोष सारे भुला दो।
व सोते हुओं को हिला दो डुला दो॥
सभी दासता - बेड़ियों को खुला दो।
भले भाल से कालिमा को धुला दो॥

✦ ✦

पसेमुर्दन भी होगा हश्र
में योंही बयाँ मेरा।
मैं इस भारत की मिट्टी हूँ
यही हिन्दोस्ताँ मेरा॥
मैं इस भारत के एक उजड़े
हुए खँडहर का ज़र्रा हूँ।

यही पूरा पता मेरा, यही
है कुल निशाँ मेरा ॥
ख़िज़ाँ के हाथ से मुरझाए
जिस गुलशन के हैं पौधे ।
मैं इस गुलशन की बुलबुल
हूँ, यही है गुलसिताँ मेरा ॥
अगर ये प्राण तेरे वास्ते
जाएँ न ऐ भारत !
तो इस हस्ती के तख़्ते से
मिटे नामोनिशाँ मेरा ॥
मैं तेरा हूँ सदा तेरा
रहूँगा बावफ़ा ख़ादिम ।
तु ही है गुलसिताँ मेरा
तुही जन्नतनिशाँ मेरा ॥

मेरे सीने में तेरे प्रेम की
अग्नी भड़कती है।
निगाहों में मेरी भारत!
तुही है कुल जहाँ मेरा॥

✦ ✦

काम करने का समय है काम करना चाहिए।
हार कर रंजो मसायब से न डरना चाहिए॥
ख़ूँ रगों में गर है कुछ क़ौमी हमैयत का रवाँ।
मर्द मैदाँ बनके माँ का दुःख हरना चाहिए॥
गर्दनों पर गर है ख़ंजर क़त्ल का इरशाद हो।
मरते मरते दम सदाक़त का ही भरना चाहिए॥
कष्ट आवें, सामने डट जाओ सीना खोलकर।
हर बशर को मुल्क की ख़िदमत में मरना चाहिए।

सब्रो इस्तक़बाल पर क़ायम रहो हरदम सभी।
बढ़ गया है जो क़दम, पीछे न धरना चाहिए॥

✦ ✦

ये दिल में आता है उठ खड़े हों,
समय हमें अब जगा रहा है।
बिला हुए तार भी लहू में,
वो तारबर्क़ी लगा रहा है॥
जहाँ अँधेरा था मुद्दतों से,
न देख सकता कोई किसी को।
उसी जिगर में छिपा हुआ कुछ,
न जाने क्या जगमगा रहा है॥
ये दिल में आता है उठ खड़े हों,
समय हमें अब जगा रहा है।

✦ ✦

मम शक्तियाँ होंगी सदा
व्यय देश-भक्ति-प्रचार में।
उद्देश्य होगा प्रेम फैलाना
मनुज - परिवार में॥
यदि देश हित मरना पड़े
मुझको सहस्रों बार भी।
तो भी न मैं इस क्लेश को
निज ध्यान में लाऊँ कभी॥
हे ईश ! भारत - भूमि में
शतबार मेरा जन्म हो।
कारण सदा ही मृत्यु का
देशोपकारक कर्म हो॥
निज भाइयों को पद-दलित
होने न दूँगा मैं कहीं।

बदनाम होगा देश यह
देशान्तरों में अब नहीं ॥
हे देश ! तुमको बीर गण
मिलकर उबारेंगे सभी ।
फिर देखते रह जायँगे इस
भव्य भारत को सभी ॥

✦ ✦

कब तक पियोगे प्याले भारत के रहने वालो ।
अब आँख खोल देखो हिन्दोस्तान वालो ।
ग़ैरों ने तुमको लूटा सदियोंसे तुमको मारा ।
क्यों बेख़बर पड़े हो भारत के नौनिहालो ॥
कपड़ा रहा न तनपै खाने को कुछ नहीं है ।
करते गदागरी हो शाहों के नामवालो ॥

सुन्दर भवन कहाँ वे रत्नों से जो जड़े थे ?
उनका पता नहीं है भारी गुमानवालो ॥
सन्तान जो तुम्हारी फिरती है मारी-मारी ।
करती है आहोज़ारी भीषम के नामवालो ॥
आपस की फूट भाई हम पर ये रंग लाई ।
तब ही तो मार खाई ऊँचे निशानवालो ॥
धर्मात्मा वही हैं करते जो देश - सेवा ।
विनती यही है मेरी भारी इमानवालो ॥

◆ ◆

जियें तो बदन पर स्वदेशी बसन हो ।
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो ॥ टेक ॥
पराया सहारा है अपमान होना,
ज़रूरी है निज शान का ध्यान होना,
है वाजिब स्वदेशी पै क़ुर्बान होना,

इसी से है सम्भव समुत्थान होना।
लगन में स्वदेशी की हर मर्दोज़न हो।
निछावर स्वदेशी पै कर मालोज़र दो,
स्वदेशी से भारत का भण्डार भर दो,
रहें चित्र-से वह चकाचौंध कर दो,
दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो,
स्वदेशी हो सज-धज स्वदेशी चलन हो।
उठो कर्मवीरो, तुम्हें कौन भय है?
स्वदेशी का संग्राम भी शांतिमय है;
प्रथा पाप की पाप में आप लय है,
विजय है, विजय है, तुम्हारी विजय है,
स्वदेशी हो पूजन, स्वदेशी भजन हो।
करो प्रण कि आज़ाद होकर रहेंगे,
जहाँ में कि बरबाद होकर रहेंगे,

सितमगर ही या शाद होकर रहेंगे,
कि हम शाहो आबाद होकर रहेंगे,
स्वदेशी हो 'अख्तर' स्वदेशी कथन हो।
जिएँ तो बदन पर स्वदेशी बसन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो॥

◆ ◆

वतन की उलफ़त से हो ज़ुबाँ पर,
स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू।
सुना दो हिंदोस्ताँ में घर-घर
स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥
यहीं की रूई, यहीं की मलमल,
यहीं का रेशम, यहीं का मख़मल।
न लंकाशायर न मैनचेस्टर,
स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥

हुए इसी ख़ाक से ही पैदा,
यह सर-ज़मीं है तुम्हारी माता।
हो यह सदा सुनके क्यों मुक़द्दर,
स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥

वतन से जिसको न हो मुहब्बत,
न क़ौम की हो जिसे हिमायत।
सुना दो बुज़दिल को यह कड़क कर,
स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥

है चूर ज़ख्मों से अपना भारत;
लगाओ तुम मरहमे-मुहब्बत।
इलाज इससे नहीं है बेहतर,
स्वदेश वस्तू, स्वदेश वस्तू॥

घुमाएँ जिस तरफ़ आँखें
स्वदेशी ही नज़र आए।
विदेशी त्यागने की हर
तरफ़ से जब ख़बर आए॥
स्वदेशी वस्त्र आभूषण,
स्वदेशी वेष औ भाषा।
हमारे पूर्वजोंवाला, यहाँ
सब ढंग हो जाए॥
विदेशी रंग में जो डूबकर
सरशार बैठे हैं।
प्रभो ! वह नीर बरसा दे कि
उनका रंग धो जाए॥

तनमें बसन स्वदेशी, मन में लगन स्वदेशी।
फिर से भवन-भवन में, विस्तार हो स्वदेशी।
सब हों स्वजन स्वदेशी, होवे चलन स्वदेशी।
मरते समय कफ़न भी दरकार हो स्वदेशी॥
फूले फले चमन में, आनन्द औ अमन में।
कोयल कुहुक रही हो, किलकार हो स्वदेशी॥
मस्जिद व मन्दिरों से बन और कन्दरों से।
ऊँचे बड़े घरों से गुञ्जार हो स्वदेशी॥
हिन्दू हो या हो मुस्लिम, ईसाई पारसी हो।
हर एक के गले का गुलहार हो स्वदेशी॥
है मंत्र-तंत्र जो कुछ, सब कुछ यही स्वदेशी।
वीणा के तार से भी, झंकार हो स्वदेशी॥
उमड़े दिलों में फिर से, गंगा बहै स्वदेशी।
माता व भगिनियों का, शृंगार हो स्वदेशी॥

अरमान हो स्वदेशी, ईमान हो स्वदेशी।
व्यापार हो स्वदेशी, सरकार हो स्वदेशी॥
कोरी चटक-मटक पर अब हम न धन लुटायें।
फूले-फले ये भारत, गुलज़ार हो स्वदेशी॥

◆ ◆

हमें दो माँ! ऐसा वरदान।
बनें सुपुत्र हिन्द माता के, तेजस्वी गुणवान।
बुद्धिमान हों, शक्तिमान हों, हों धनवान सुज्ञान॥
चरण-कमल के तेरे माता! हों सेवक शुचिवान।
चाहे जहाँ रहें पर हमको हो भारत का ध्यान॥
सुनें सदा ही निज कानों से शुभ स्वराज्य की तान।
भरा हुआ हो अंग अंग में भारत-गौरव-मान॥
उसकी रक्षा में हम कर दें अर्पण अ ने प्रान।

मरें, भस्म भी गावे प्रति दिन "प्यारा हिन्दुस्तान"।
कण-कण से स्वतंत्र भारत की, निकले मीठी तान।
ध्येय, गेय, उद्देश्य हमारा, हो स्वदेश-कल्यान।
करें दीन-जन-त्राण, बनें सब भारत के प्रिय प्रान॥

बालचर-संगीत

भारत के वीर कहावेंगे।
सेवा-व्रत को अपनावेंगे॥टेक॥
सदा सभी को मित्र बना कर
द्वेष हृदय से दूर हटाकर।
शत्रु विहीन जगत को करके,
सबका भला मनावेंगे॥

भारत के वीर कहावेंगे,
सेवा-व्रत को अपनावेंगे ॥
सारे धर्मों से है न्यारा,
सेवा-धर्म हमारा प्यारा ।
इस पर ही तन, मन, धन, सारा—
जीवन भेंट चढ़ावेंगे ॥भारत के०॥
संकट से संग्राम करेंगे,
कभी किसी से नहीं डरेंगे ।
आजीवन प्रण पूर्ण करेंगे,
दुख में भी सुख पावेंगे ॥भारतके०॥
गुरुजन के हम आज्ञाकारी,
तत्पर, ब्रह्मचर्य-व्रत-धारी ।
दीनों के बन कर हितकारी,
उनका कष्ट मिटावेंगे ॥भारतके०॥

लेकर जगदीश्वर का नाम,
छेड़ दिया है अब संग्राम ॥
चलो सिपाही बढ़े चलो !
प्यारे भाई चले चलो !!
घाटी को करना है पार.
पर्वत पर चढ़ना है यार ।
निर्जन वन में, गिरि कन्दर में,
जल में, थल में, सरिता सर में ॥
गहराई में, ऊँचाई में,
महा भयानक कठिनाई में ।
अपनी राह बनाना होगा,
जग को मार्ग दिखाना होगा ॥
चलो सिपाही बढ़े चलो,
प्यारे भाई चले चलो ॥

(२)

घर द्वारों को हमने छोड़ा।
सुख साजों से मुँह को मोड़ा॥
प्रिय परिजन का लेकर प्यार।
अब हम लड़ने को तैयार॥
वीर बनेंगे, खूब लड़ेंगे।
जमे रहेंगे, नहीं हटेंगे॥
मरना होगा मर जायेंगे।
पीठ नहीं हम दिखलायेंगे॥
चलो सिपाही बढ़े चलो।
प्यारे भाई चले चलो॥

(३)

विद्या को हमने अपनाया।
शारीरिक बल खूब बढ़ाया॥

संयम का सुन्दर उपदेश ।
देश-भक्ति का प्रिय सन्देश ॥
सत्य, शील, सद्‌गुण को लेकर ।
जग-सेवा-व्रत - दीक्षित होकर ॥
घर से निकले बढ़े चलेंगे ।
जय-लक्ष्मी को, यश को लेंगे ॥
चलो सिपाही बढ़े चलो ।
प्यारे भाई चले चलो ॥

(४)

जीवन का भीषण संग्राम ।
जय पाकर होगा विश्राम ॥
देखो ! प्यारा देश दुखी है ।
कहो कहाँ नर एक सुखी है ?

सब मिल कर करलो उद्धार ।
नव जीवन का हो संचार ॥
वीरो आगे पैर बढ़ाओ ।
जय पाओ औ सुयश कमाओ ॥
चलो सिपाही बढ़े चलो ।
प्यारे भाई चले चलो ॥

हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान ।
प्यारा प्रान हिन्दुस्तान ॥टेक॥
उसकी आन अपनी आन ।
उसकी शान अपनी शान ॥
उसका मान अपना मान ।
उसका गीत अपना गान ॥
प्यारी तान प्यारा प्रान ।
हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान ॥

(२)

उसकी रीत अपनी रीत।
उसकी नीत अपनी नीत॥
उसकी प्रीत अपनी प्रीत।
उसकी जीत अपनी जीत॥
वह जो जान प्यारा प्रान।
हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान॥

(३)

घर घर घोर हाहाकार।
या यह यार! रण हुँकार॥
प्यारा देश रहा पुकार।
सच्ची प्रीत सच्चा प्यार॥
है बलिदान प्यारा प्रान।
हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान॥

(४)

वह बरबाद हम बरबाद।
वह आबाद हम आबाद॥
वह आज़ाद हम आज़ाद।
ज़िन्दाबाद ज़िन्दाबाद॥
हिन्दुस्तान प्यारा प्रान।
हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान॥

◆ ◆

जग सेवक चर हैं हम हम हम।
सब सेवक चर हैं हम हम हम॥
सेवक चर हैं सेवक वर हैं।
शुचिता शील दया के घर हैं॥
सेवा में रहते तत्पर हैं
करते हर दम श्रम श्रम श्रम॥

सेवा के हित फिरे विचरते
विपदा के मग में पग धरते।
कठिनाई से कभी न डरते
कहीं न रुकते थम थम थम॥
कष्ट कहीं पर जो सुन पावें
सुनते ही एक दम वहाँ धावें।
जो कुछ सके मदद पहुँचावें
मुस्तैदी से जम जम जम॥
चाहे पड़ रही धूप कड़ी हो
वर्षा की लग रही झड़ी हो।
कड़क के बिजली तड़प रही हो
चमक रही हो चम चम चम॥
काम पै तब भी जाय डट हम
विघ्नों से डर नहीं हटें हम।

विपदा के सिर धाय जुटें हम
पहुँच के धड़ से धम धम धम ॥
जग सेवक चर हैं हम हम हम
सब सेवक चर हैं हम हम हम ॥

◆ ◆

स्वागत प्यारे वन्धु हमारे ।
भारत माता तुमको प्यारी
तुम भारत माता के प्यारे ।
स्वागत प्यारे वन्धु हमारे ।
धीर वीर गम्भीर सुहावन ।
पूरित सद्विचार मनभावन ॥
मातृ-भूमि के हिय हरषावन ।
चिरजीवहु भारत के बारे ॥
स्वागत प्यारे वन्धु हमारे ।

सुन्दर सद्विचार से प्रेरित।
दृढ़-प्रतिज्ञ सद्‌गुण से पूरित॥
जन्म-भूमि तुम पर जग वारित।
जननी - मन्दिर के उजियारे॥
स्वागत प्यारे वन्धु हमारे।

जन्म-भूमि जग-श्रेष्ठ तुम्हारी।
सुख संपति स्वर्गहुँ से प्यारी॥
महिमा तीन लोक से न्यारी।
तुमसे सुत अपनावन हारे॥
स्वागत प्यारे वन्धु हमारे॥

मातृभूमि-हित यह तन-मन हो।
उसकी सेवा का शुभ प्रन हो॥
धीर साहसी निर्भय मन हो।
मित्र सभी जन होहिं तुम्हारे॥
स्वागत प्यारे वन्धु हमारे।

शुभ विचार हों अचल तुम्हारे।
प्रण सब पूरे होहिं तुम्हारे ॥
हों सहाय जगदीश्वर प्यारे।
जियहु 'लली' निज यश बिस्तारे ॥
स्वागत प्यारे वन्धु हमारे।

॥ विदित हैं हम भारत के वीर ॥

चाहे जो बाधायें आयें।
पथ को कंटक-पूर्ण बनायें ॥
पर हम उनसे क्यों घबरायें।
साहस बल है दायें बायें ॥
नहीं होते हम तनिक अधीर।
विदित हैं हम भारत के वीर ॥

(२)

पथ-काँटों को कुचल कुचलकर।

विपद-सिन्धु-से निकल निकल कर॥

बैरी दल को बिकल बिकल कर।

समर करेंगे सर चल चल कर॥

प्रेम के मतवाले रणधीर।

विदित हैं हम भारत के वीर॥

(३)

इधर नाम के साथ विजय है।

उधर मृत्यु-सँग स्वर्ग-निलय है॥

दोनों कर मोदक मधुमय है।

हमें भला अब किसका भय है॥

पहुँच जायेंगे मंजिल - तीर।

विदित हैं हम भारत के वीर॥

(४)

पान कर चुके गीतामृत हैं।
वीरों की सन्तान विदित हैं।
हम पुनीत भव-भीति-रहित हैं।
देख आत्मबल लोग चकित हैं॥
मिटा देंगे माता की पीर।
विदित हैं हम भारत के वीर॥

◆ ◆

हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती—
स्वयं प्रभा समुज्वला
स्वतंत्रता पुकारती—
'अमर्त्य वीर - पुत्र हो
दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो।

प्रशस्त पुण्य पंथ है
बढ़े चलो बढ़े चलो ॥'

असंख्य-कीर्ति रश्मियाँ
विकीर्ण दिव्य दाह सी
सपूत मातृभूमि के
रुको न शूर साहसी
अराति-सैन्य-सिन्धु में
सुबाड़वाग्नि से जलो
प्रवीर हो जयी बनो
बढ़े चलो बढ़े चलो ॥

◆ ◆

हिन्द - बाल - बालिका, सहर्ष गर्जना करो।
ईश का, स्वदेश का नरेश का विजै करो

गाओ हिन्द की कथा को, गाओ आर्य-वीरता को
वैसी चाल चलेंगे हम, वैसी चाल चलेंगे हम
पद्म - तारकांकिता, शुभा ध्वजा फहरायेंगे।
दिव्य मातृभूमि के, सुकीर्ति - गीत गायेंगे॥
हिन्द-बाल-बालिका, भविष्य भाग्य को स्मरो।
दत्त देश-भक्त के सुकार्य सब निडर करो॥
गाओ हिन्द की कथा को।
गाओ आर्य वीरता को।
वैसी चाल चलेंगे हम
वैसी चाल चलेंगे हम॥

◆ ◆

स्काउट अपनी आन पर, और अपनी शान पर,
अपने बड़ों के नाम पर, सिर को भी कटाएँगे।

दिन को और रात को, शाम को, प्रभात को,
सेवा के जज़्बात को, दुगुना करते जाएँगे ॥
॥ स्काउट अपनी० ॥

विपत्तियों को टारना, भारत का भार उतारना ।
सर क़ौम पर भी वारना, सीखेंगे और सिखाएँगे ॥
॥ स्काउट अपनी० ॥

तेग़ से तलवार से, ज़ुल्म के हथियार से ।
तोपों की बौछार से, हम नहीं घबराएँगे ॥
॥ स्काउट अपनी० ॥

सेवा निर्बल दुखियों को, और पशु पत्तियों की ।
व्याकुल निर्धन व्यक्तियों की, करके हम दिखाएँगे ॥
॥ स्काउट अपनी० ॥

मरना अपनी आन पर, और अपनी शान पर ।
खेल जाना जान पर, करके हम दिखलाएँगे ॥
॥ स्काउट अपनी० ॥

मत हमें निरा बालक समझो।
हम हैं भारत के वीर ॥ टेक ॥
क्या कहा ? अक्ल के कच्चे हैं ?
हम सभी शेर के बच्चे हैं !
विश्वासी सीधे सच्चे हैं।
अवसर पर चला दिखा देंगे—
अभिमन्यु जैसे तीर ॥ मत हमें० ॥

(२)

पढ़ने में ध्यान लगाते हैं,
हम खूब खेलते खाते हैं।
जब काम पै जा डट जाते हैं।
फिर हटा न हमको सकते—
ओले, आँधी, बिजली नीर ॥ मत हमें० ॥

(३)

शुचि प्रण है सेवा करने का,

निज मातृभूमि दम भरने का ;

निर्भय हो नित्य विचरने का,

दो आशिष होवें सफल—

तुम्हारे नन्हे नन्हे वीर॥ मत हमें० ॥

◆ ◆

संसार के मैदान में है

जीवन का संग्राम ।

है जीवन का संग्राम, हाँ,

है जीवन का संग्राम ॥

संसार के मैदान में है

जीवन का संग्राम ।

यॉं लड़ना है औ भिड़ना है

औ करना है कुछ काम ॥

याँ दुर्गम घाटी चढ़नी है,
तै करने हैं मैदान।
संसार के मैदान में है
जीवन का संग्राम॥
है जीवन का संग्राम, हाँ,
है जीवन का संग्राम।
याँ चलना है, औ बढ़ना है,
औ जाना है निज धाम॥
रुकने का तो इस मंज़िल में
लेना भी है नहिं नाम।
संसार के मैदान में है
जीवन का संग्राम॥
है जीवन का संग्राम, हाँ,
है जीवन का संग्राम।

सदा हृदय को दृढ़ रखना,
रखना श्रीवर का ध्यान ॥
और मुश्किल से भी मुश्किल
में चेहरे पर हो मुस्कान।
संसार के मैदान में है
जीवन का संग्राम ॥
है जीवन का संग्राम, हाँ,
है जीवन का संग्राम।
संसार के मैदान में है
जीवन का संग्राम ॥

SEOUTING SONGS.

Boys of India Girls of India,
Who have joined our happy band.
Let your song of gladness ring for,
God and Crown and Motherland.
Chorus:—Sing of Bharatvarsha's story,
Of her heroes and her glory,
As we march upon our way,
As we march upon our way,

With the Star and with the Lotus,
Gleaming on the flag above.
We will sing our Mother's praises,
And her mighty Heroe's love.
hCorus:—Sing of Bharatvarsha's story.

Of her heroes and her glory,
As we march upon our way,
As we march upon our way,

Boys of India, Girls of India,
Mindful of your future fame.
Strive in service, never daunted,
To uphold our noble aim.
Chorus:—Sing of Bharatvarsha's etc...

◆ ◆

Shree Rama's strength in duty,
Shree Krishna's love devout.
Give unto us our pattern,
Of India's perfect scout.
Chorus:—And in danger or in service
There's none shall be compared

To the lads of Star and the Lotus
With their motto 'Be Prepared.'

From Shivaji undaunted
And Akbar great in mind,
We scouts take our example
To work for all mankind.

Chorus:—And in danger or in service etc.

So Scouts be up and doing
Like the mighty ones of old;
With deeds of brave devotion
Your destiny unfold-

Chorns:—And in danger or in service etc.

✦ ✦

God save our Motherland,
God bless our much-loved Land,
God save our Ind !

Sing of her story old,
Sing of her heroes bold,
Sing of her hearts of gold,
God save our Ind!

Sing Ramachandra's praise,
Sing of the Rajput days,
God save our Ind!

Sing of great Akbar's sway,
Sing of Shivaji's day,
Sing boldly Freedom's lay,
God save our Ind!

Lord of the Burning Ground,
Send forth thy Damru sound,
God save our Ind!

Grant us the hero heart,
Careless of loss or smart,

As men to play our part,
God save' our Ind !

◆ ◆

Sons of Ind, why sit ye idle,
Wait ye for some Deva's aid ?
Buckle, to be up and doing !
Nations by themselve's are made !

Yours the land, lives, all, at stake tho'
Not by you the cards are played ;
Are you dumb? Speak up and claim them,
Nations by themselves are made !

What avail your wealth your learning,
Empty title, sorbid trade ?
True self-rule were worth them all !
Nations by themselves are made !

Whispered murmurs darkly creeping,
Hidden worms beneath the glade,
Not by such shall wrong be righted !
Nations by themselves are made !
Sons of Ind ! be up and doing ;
Let your course by none be stayed ;
Lo ! the Dawn is in the East ;
Nations by themselves are made.

When the leather goes a spinning,
And a fellow muffs a catch,
When the other side is winning,
In the season's toughtest match;
When his century is nearing
And his partner runs him out,
Who's the chap that still looks cheerful?
That's a Scout !

When opponents badly faring,
Meet, collapse, with 'blot' on 'blot',
When the rival captain's swearing
And intends to stop the rot,
Who's the chap that stops the jeering
When the first ball bowls him out ?
Who's it that says, 'Hard luck, sir' ?
That's a Scout !

When a fellow's made a blunder,
Done another fellow wrong,
Helped to push a rival under,
Passed some cruel tale along,
Who's the chap that doesn't shirk it,
But admits his fault right out,
With "I'm sorry, lad forgive me" ?
That's a Scout !

When the term to end is winding,
And the c'ass exams begin,
When for honours chaps are grinding,
And a mark or two will win,
Who's the one that will not copy,
But, if there be any doubt,
Gives up honours before Honour ?
    That's a Scout !

Who's the chap that doesn't chatter,
Of the things he's going to do,
But who knows the things that matter,
Stands for what is clean and true ?
Who's the chap that finds life's beauty
Fairer when with brothers shared ?
    That's a Scout !

Who's the chap that, for his duty
Always tries to "Be Prepared" ?
Who for Conscience Crown and Country,
Does his best, day in, day out ?
Who's a hero in the making ?
That's a Scout !

THE END

पता:—श्रीहनुमान प्रसाद जालोटे एम० ए०, एल्० टी०
सेंट्रल हिन्दू-स्कूल कमच्छा, बनारस सिटी ।

प्रकाशक—श्रीहनुमान प्रसाद जालोटे, एम० ए०, एल-टी, काशी।

श्रीः

संगीत-सरोवर

(देव-तट)

यह संगीत-सरोवर का प्रथम भाग है. इसमें प्रार्थना के श्लोक, तुलसी, सूर, कबीर, नानक, मीरा प्रभृति सन्तों के प्रसिद्ध भजन, आधुनिक कवियों के ईश-गुण-गान, 'महात्माजी' का परम प्रिय गुजराती भजन इत्यादि हैं। अन्त में नित्य-पूजा-विधान भी सम्मिलित है। लीजिए ! एक स्थान पर इतना अपूर्व संग्रह !! सो भी केवल चार आने में !!!

पता—श्री हनुमान प्रसाद जालोटे

एम० ए०, एल्-टी०

सेंट्रल हिन्दू स्कूल कमच्छा

बनारस सिटी।

मुद्रक—श्रीप्रवासीलाल वर्मा मालवीय, सरस्वती-प्रेस, काशी।